हरिभूमि
# रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

**तापमान**

अधिकतम 33 .5 डिग्री
न्यूनतम 15 .5 डिग्री

11 नशे की लत केवल एक व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज के लिए गंभीर चुनौती



12 चंद घंटों में पटरी पर लौटी बिजली व्यवस्था, आधी रात तक सभी फीडर हो गए रिस्टोर



## खबर संक्षेप



### कोर्ट से किया घोषित पीओ चढ़ा हत्थे

**रेवाड़ी।** थाना मॉडल टाउन पुलिस ने कोर्ट से घोषित किए जा चुके एक पीओ को गिरफ्तार किया है। अदालत में चल रहे एक मामले में महेंद्रगढ़ के मोहल्ला खटीकान निवासी भारतलाल लगातार अनुपस्थित चल रहा था। बार-बार नोटिस दिए जाने के बाद भी वह कोर्ट में हाजिर में नहीं हुआ, तो कोर्ट ने उसे पीओ घोषित कर दिया। उसके खिलाफ केस दर्ज करने के आदेश दिए गए थे। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

### सड़क हादसों के आरोपी चालक काबू

**रेवाड़ी।** पुलिस ने सड़क हादसों के बाद मौके से फरार हुए दो वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। इन हादसों दो लोगों की मौत हो गई थी। रोहड़ाई थाना पुलिस ने रोहतक नेशनल हाइव पर हुए हादसे के बाद 13 सितंबर को वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने वाहन चालक करनाल के गढ़ी निवासी रविंद्र सिंह को गिरफ्तार किया है। एक अन्य हादसे के बाद पुलिस ने 2 अक्टूबर को वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने दिल्ली के नरेला निवासी कलीराम को गिरफ्तार किया है। दोनों को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

### चोरी का आरोपी सीआईए ने दबोचा

**कोसली।** सीआईए की टीम ने लगभग दो साल पुराने चोरी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने थाना क्षेत्र में हुई चोरी की वारदात के बाद 29 दिसंबर 2024 को केस दर्ज किया था। मौका मुआयना करने के बाद पुलिस ने चोरी के आरोपी की तलाश शुरू की थी, लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका था। बाद में मामले की जांच सीआईए कोसली ने शुरू की। इस मामले में पुलिस ने यूपी के कोंदरा निवासी सतेंद्र को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के बाद आरोपी को कोर्ट में पेश करते हुए जेल भेज दिया गया।

### समारोह स्थल के पास मिला अधेड़ का शव

**रेवाड़ी।** शनिवार सुबह सेक्टर-4 में एक समारोह स्थल के पास अधेड़ व्यक्ति का शव पड़ा मिला। पुलिस ने शव को शिनाख्त के लिए सामान्य अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया। पुलिस को सूचना मिली थी कि किसान वाटिका के पास एक व्यक्ति का शव पड़ा हुआ है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर जाकर शव कब्जे में ले लिया। सीन ऑफ क्राइम टीम को भी मौके पर बुलाया गया। मृतक के शरीर पर चोट के कोई निशान नहीं पाए गए। मृतक की उम्र लगभग 55 साल बताई जा रही है। पुलिस ने आसपास के लोगों से शव की पहचान कराने के प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। बाद में शव को मोर्चरी में रखवा दिया गया।

### बीएसएनएल मोबाइल टावर से 24 बैट्रियां चोरी

**कोसली।** लिलोढ़ गांव स्थित बीएसएनएल टावर से बुधवार देर रात चोर 24 बैट्री चोरी कर ले गए। बीएसएनएल कोसली के एसडीओ अनिल कुमार ने नाहड़ पुलिस चौकी में शिकायत दर्ज कराई है। एसडीओ ने बताया कि मोबाइल सेक्शन से लिलोढ़ टावर के बंद होने की सूचना मिली थी, जिसके बाद वे कोसली से लिलोढ गांव की ओर रवाना हुए।

नगर परिषद की ओर से निर्माण कार्य शुरू करने के बाद नहीं दिया जा रहा ध्यान

# ब्रास मार्केट पार्क बना अवैध पार्किंग स्थल सेक्टर एक के पार्क में गोवंश का जमावड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

नगर परिषद की सुस्त कार्यशैली के कारण शहर के पार्कों की हालत में सुधार नहीं हो पा रहा है। नगर परिषद की ओर से पार्कों की देखरेख तक नहीं की जा रही है। पार्कों में निर्माण कार्य शुरू होने के बाद ध्यान तक नहीं दिया जा रहा है, जिससे नागरिकों को पार्कों में मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहना पड़ रहा है। सुविधाओं का अभाव होने के कारण पार्कों में आने वाले लोगों की संख्या तक कम होने लगी है। शहर के नेहरू पार्क, ब्रास मार्केट वीर सारवरकर पार्क, ब्रास मार्केट तिकोना पार्क सहित सेक्टर-1 के पार्क की दयनीय हालत में सुधार तक नहीं किया जा रहा है। नगर परिषद की ओर से लंबे समय से उपेक्षा के शिकार सेक्टर-1 के होली पार्क की चारदीवारी को तोड़कर छोड़ा हुआ है। नवीनीकरण कार्य के कारण तोड़ी गई चारदीवारी को एक महीने का समय बीत चुका है। चारदीवारी तोड़े जाने के कारण पार्क को गोवंश से अपना आश्रय बना लिया है, जिससे सेक्टरवासियों की परेशानी ओर भी बढ़ गई है। वही ब्रास मार्केट के वीर सावरकर पार्क के 32 लाख की लागत से शुरू किया गया जीर्णोद्धार कार्य करीब पांच महीने से बंद पड़ा हुआ है।



रेवाड़ी। एक महीने से टूटी पड़ी सेक्टर-1 पार्क की चारदीवारी। फोटो : हरिभूमि

### पार्कों में लगा रहता गोवंश का जमावड़ा



शहर के कई पार्कों में चारदीवारी जर्जर होने के कारण इनमे गोवंश का जमावड़ा लगा रहता है। ये गोवंश पार्क में गंदगी फैलाने के साथ लोगों के लिए भी खतरा बने हुए है, क्योंकि शहर में सड़कों पर घूमते गोवंशों के हमले से कई लोग मौत का शिकार हो चुके है वहीं दर्जनों लोग घायल हो चुके है। वर्तमान में ब्रास मार्केट के वीर सावरकर पार्क व सेक्टर-1 के होली पार्क में काफी संख्या में गोवंश बैठे देखे जा सकते है।

### ब्रास मार्केट के पार्कों का अटका कार्य

ब्रास मार्केट के वीर सावरकर पार्क का पांच महीने से जीर्णोद्धार कार्य बंद पड़ा हुआ है। इसके पैदल पथ का कार्य अधूरा पड़ा हुआ है। पार्क की चारदीवारी भी अधूरी बनाकर छोड़ दी गई है, जिससे पार्क के अंदर गोवंश का जमावड़ा लगा रहता है तथा लोगों ने अपने वाहन खड़ा करके पार्क को पार्किंग स्थल बना लिया है। यहां तक की सफाई न होने से जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हुए है। पार्क में अभी शौचालय भी बनाया जाना है। वहीं ब्रास मार्केट के तिकोना पार्क की लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी हालत दयनीय बनी हुई है।

### पार्क में खड़ी गाडियां

सरकुलर रोड से लगते वीर सावरकर पार्क की चारदीवारी का निर्माण कार्य अधूरा पड़ा रहने के कारण लोगो इसमें अपने वाहन खड़ा करने लगे है, जिससे अव्यवस्था फैल रही है। पार्क में पूरे दिन वाहनों के खड़ा करने का क्रम जारी रहता है। पार्क में आने वाले लोग नगर परिषद के अधिकारियों को बार-बार निर्माण कार्य पूरा करने की गुहार लगा चुके है, लेकिन पांच महीने से बंद पड़े कार्य को शुरू तक नहीं किया जा रहा है।

# सीआईए ने दो साल बाद पकड़ा चोरी का आरोपी



■ चोरी के इस मामले में पुलिस सात आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी

रेवाड़ी। सीआईए की गिरफ्त में आरोपी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

सीआईए की टीम ने लगभग 2 साल से फरार चल रहे बैंक में चोरी के ईनामी आरोपी को गिरफ्तार किया है। चोरी के इस मामले में पुलिस 7 आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

29 दिसंबर 2024 को सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की कोसली शाखा के प्रबंधक सीताराम मीना ने पुलिस शिकायत में बताया था कि 28 दिसंबर की रात बैंक की खिड़की तोड़कर चोर अंदर प्रवेश कर गए।

चोरों ने बैंक के स्ट्रांग रूम और गन बॉक्स को गैस कटर से काटने का प्रयास किया। स्ट्रांग रूम का लॉक क्षतिग्रस्त होने के बावजूद उसमें रखी संपत्ति सुरक्षित रही। चोर बैंक से 3 लेजर प्रिंटर, 4 बड़ी बैटरी व एक सीसीटीवी डीवीआर चोरी करके फरार हो गए थे। पुलिस ने मैनेजर की शिकायत पर चोरी का केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू की थी। जांच के बाद पुलिस ने चोर गिरोह के सात सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया था। बैंक से चोरी किया गया सामान भी पुलिस ने बरामद कर लिया था। इस मामले में पुलिस ने एक और आरोपी यूपी के कोंदरा निवासी सतेंद्र उर्फ सीटू को गिरफ्तार किया है।

### आदतन अपराधी है आरोपी सतेंद्र

पुलिस के अनुसार सतेंद्र आदतन अपराधी है। उसके खिलाफ यूपी के अलीगढ़ थाने दुष्कर्म व अन्य अपराधों के तहत केस दर्ज हैं। पुलिस ने उस पर 5 हजार रुपये का ईनाम रखा हुआ था। सीआईए ने आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद 2 दिन के रिमांड पर लिया है। रिमांड के दौरान उससे चोरी के मामले में अन्य पूछताछ की जाएगी। पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों का पता लगाने के प्रयास कर रही है।

# विनय को कर्नाटक में बड़ी जिम्मेदारी, राज्यपाल के निजी सचिव बनाए गए

■ जिला विपणन प्रवर्तन अधिकारी के पद पर तैनात थे विनय यादव प्रतिनियुक्ति पर उन्हें डा. सुधा यादव का निजी सचिव बनाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड में बतौर गुरूग्राम और फरीदाबाद के जिला विपणन प्रवर्तन अधिकारी कार्यरत रहे विनय यादव को अब कर्नाटक में बड़ी जिम्मेदारी मिली है। उन्हें कर्नाटक की राज्यपाल डा. सुधा यादव का निजी सचिव बनाया गया है, जिससे अहीरवाल में खुशी की लहर दौड़ गई है। मूल रूप से जिले के गांव कंवाली निवासी विनय यादव के पास कुछ समय पहले तक रेवाड़ी के जिला विपणन प्रवर्तन अधिकारी का भी अतिरिक्त कार्यभार था। इस पद पर कर्तव्यनिष्ठा व ईमानदारी से कार्य करते हुए उन्होंने मार्केटिंग बोर्ड में अनेक सराहनीय कार्य किए। कर्नाटक की राज्यपाल डा. सुधा यादव भी जिले के गांव के धामलावास की मूल निवासी हैं। उन्होंने विनय यादव को उनकी कर्तव्यपरायणता देखते हुए निजी सचिव के रूप में चुना है। उन्हें डेपुटेशन पर मार्केटिंग बोर्ड से कर्नाटक भेजा गया है। विनय यादव की नियुक्ति पर अहीरवाल के कई संगठनों व प्रबुद्ध लोगों ने खुशी जाहिर करते हुए उन्हें बधाई दी है। उन्होंने इसके लिए डा. सुधा यादव का भी आभार व्यक्त किया है। विनय यादव ने अपनी नई जिम्मेदारी पर डा. सुधा यादव और भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया सह प्रभारी सिद्धार्थ यादव का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, वह उसे पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से निभाएंगे। उन्होंने अपनी इस नियुक्ति पर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का भी आभार जताया है।



रेवाड़ी। निजी सचिव बनने के बाद डा. सुधा यादव को बुक्का भेंट करते हुए विनय यादव। फोटो : हरिभूमि

### सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रियता

विनय यादव ने मार्केटिंग बोर्ड में सेवारत रहते हुए क्षेत्र के सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया है। वह जरूरतमंद व मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन भी देते हैं। क्षेत्र में होने वाली सामाजिक गतिविधियों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनकी यह उपलब्धि अहीरवाल के लिए गौरव से कम नहीं है।

# सीआईए की अवैध तेल कारोबार पर कार्रवाई

■ 2200 लीटर पेट्रोल व थिनर पकड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शनिवार को सीआईए टीम ने अवैध तेल कारोबारियों के खिलाफ कार्रवाई की। पुलिस टीम ने एनएच-48 के पास गांव खिजुरी में छापा मारा और करीब 2200 लीटर पेट्रोल और थिनर से भरे ड्रम पकड़े। मौके से दो पिकअप, दो मोटर और पाइप भी बरामद किए गए। पुलिस टीम ने बताया कि करनावास स्थित तेल डिपो से निकलने वाले टैंकरों से तेल चुराया जाता था। यह चोरी का तेल राजस्थान में सप्लाई होता था। अवैध तेल सप्लायर पेट्रोल निकालने के बाद टैंकर में थिनर मिला देते थे, ताकि कमी का पता न चल सकें। सीआईए इंचार्ज संजय कुमार ने बताया कि खिजुरी में हाइवे के पास अवैध तेल का काम चल रहा था। छापेमारी में 11.5 पेट्रोल और थिनर से भरे बड़े ड्रम व 5 खाली ड्रम मिले। आरोपियों की तलाश की जा रही है। पुलिस ने अवैध तेल कारोबार को लेकर पिछले एक महीने में 5 ठिकानों पर छापा मारा है। पुलिस ने गत माह भवाड़ी और गुजरीवास में 5000 लीटर से ज्यादा पेट्रोल और थिनर पकड़ा था। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने टैंकर चालकों को डिपो के 5 किलोमीटर के दायरे में न रुकने के आदेश दिए थे। फिर भी, अवैध तेल सप्लायरों ने डिपो से करीब 5 किलोमीटर दूर खिजुरी गांव में नया ठिकाना बना लिया। एसपी मीणा ने चेतावनी देते हुए कहा कि जिले में तेल चोरी का अवैध धंधा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।





रेवाड़ी। सीआईए की ओर से पकड़े गए अवैध तेल के ड्रम, मौके पर मौजूद सीआईए की टीम। फोटो : हरिभूमि

*मेले में विभिन्न प्रकार के झूले, प्रस्तुति के लिए मंच और पांडल सजाया गया*

# जेपीएस में आज लगेगा मेला, लक्की ड्रा में कार सहित मिलेंगे आकर्षक पुरस्कार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रविवार 25 अक्टूबर को जैन पब्लिक स्कूल में महा मेले के आयोजन किया जाएगा। मेले में विभिन्न प्रकार के झूले, प्रस्तुति के लिए मंच और पांडल सजाया गया है। विद्यालय के मैदान में आयोजित मेले में स्वादिस्ट व्यंजनों तथा मनोरंजन खेलों के लिए अलग-अलग स्टालें लगाई गई हैं, वहीं भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए विशाल मंच भी बनाया गया है। इस बार जेपीएस फेस्ट में लक्की ड्रा आकर्षण का केंद्र रहेगा। पहले पुरस्कार के रूप में टाटा टियागो कार निकाली जा रही है। विद्यालय के मीडिया प्रभारी गोपाल शर्मा एवं उप प्रधानाचार्या विजय गुप्ता ने बताया कि आयोजन को भव्य बनाने की तैयारियां की जा चुकी हैं। प्रबंधन समिति के प्रधान सीए मोहित जैन के मार्गदर्शन एवं प्रधानाचार्या प्रतिमा शर्मा की अगुवाई में तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सीए चरणजोत सिंह नंदा शिरकत करेंगे।पहले पुरस्कार के रूप में टाटा टियागो कार, दो दूसरे पुरस्कार के रूप में इलेक्ट्रिक स्कूटी व तीन एलईडी टीवी निकाले जाएंगे। विद्यालय को 41 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 41 सांत्वना पुरस्कार के रूप में ट्राली बैग दिए जाएंगे। शनिवार को प्रबंधन समिति उप प्रधान सीमा जैन, सचिव अमित जैन, प्रबंधक प्रवीण जैन, कोषाध्यक्ष सचिन जैन, शासकीय निकाय सदस्य रविंद्र जैन, विजय , प्रद्युम्न व निपुण के साथ प्रधानाचार्या एवं उप प्रधानाचार्या ने तैयारियों का जायजा लिया।



रेवाड़ी। जेपीएस मेले के लिए सजाया गया पांडाल।

### गुड गवर्नेंस पुरस्कार के लिए एक नवंबर से शुरू होगी आवेदन प्रक्रिया

**रेवाड़ी।** हरियाणा सरकार ने सरकारी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता, नवाचार और बेहतर प्रशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना अधिसूचित की है। योजना के तहत असाधारण एवं नवाचारपूर्ण कार्य करने वाले सरकारी कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार राज्य स्तर और जिला स्तर पर प्रदान किए जाएंगे। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना के अनुसार, राज्य स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को 51000 रुपये प्रति सदस्य तथा जिला स्तर पर चयनित कर्मचारियों को 31000 रुपये प्रति सदस्य नकद पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त विजेताओं को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए जाएंगे। डीसी ने बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना के तहत राज्य स्तर पर दो श्रेणियों में पुरस्कार दिए जाएंगे। इनमें राज्य फ्लैगशिप पुरस्कार और राज्य पुरस्कार शामिल हैं। दोनों श्रेणियों में अधिकतम पांच-पांच पुरस्कार प्रदान किए जा सकेंगे।

■ सुशासन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को मिलेगा पुरस्कार

**मौसम** बावल कृषि अनुसंधान केंद्र मुहैया करा रहा उन्नत बीज, किसानों को संतुलित खादों के इस्तेमाल की सलाह

# सरसों के लिए मौसम हुआ अनुकूल, अब बिजाई में देरी नहीं करें किसान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

बीते शुक्रवार को बादल और बूंदाबांदी के बाद मौसम के तेवर ठंडे पड़ने शुरू हो गए हैं। सरसों की बिजाई के लिए मौसम पूरी तरह अनुकूल बन गया है। किसानों को अब सरसों की बिजाई में ज्यादा देरी नहीं करनी चाहिए। चौ. चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र बावल के निदेशक डॉ. धर्मबीर यादव ने किसानों को सलाह दी है कि वह सरसों बिजाई का कार्य जल्द से जल्द पूरा कर लें। उन्होंने किसानों को सरसों की उन्नत किस्मों के चयन से लेकर बीज उपचार और खाद के उचित इस्तेमाल तक की जानकारी देते हुए वैज्ञानिक तरीके से खेती करने का आह्वान किया है। डॉ. धर्मबीर यादव के अनुसार सरसों की बिजाई के लिए सिंचित क्षेत्रों में प्रति एकड़ 1 किलोग्राम तथा वर्षा आधारित क्षेत्रों में डेढ़ किलोग्राम बीज का इस्तेमाल करना चाहिए। क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र बावल में सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1424 और आरएच-725 का बीज बिक्री के लिए उपलब्ध है। ये किस्में दक्षिण-पश्चिम हरियाणा की जलवायु और परिस्थितियों के अनुकूल हैं। किसान केंद्र से 150 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बीज प्राप्त कर सकते हैं। बीज तीन किलोग्राम के पैकेट में उपलब्ध है। किसान कार्यालय समय के दौरान सुबह नौ बजे से शाम साढ़े चार बजे तक केंद्र पर पहुंचकर बीज खरीद सकते हैं।



रेवाड़ी। खेत में सरसों की बिजाई करते हुए किसान। फोटो : हरिभूमि

### किसान वैज्ञानिकों से लें सलाह



क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र बावल ने किसानों से सरसों की बिजाई में अनावश्यक देरी नहीं करने तथा बीज की मात्रा, बीज उपचार और खाद प्रबंधन के निर्धारित तरीकों को अपनाने का आग्रह किया है। खेती से संबंधित किसी भी प्रकार की अतिरिक्त जानकारी या सलाह के लिए किसान क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों अथवा कृषि विभाग के अधिकारियों से संपर्क कर सकते हैं।

### किसानों के लिए प्रमुख जानकारी

सरसों की उन्नत किस्में-आरएच-1424 और आरएच-725
बीज की कीमत- 150 रुपये प्रति किलोग्राम
बीज पैकिंग- तीन किलोग्राम
सिंचित क्षेत्र में बीज- एक किलोग्राम प्रति एकड़
वर्षा आधारित क्षेत्र में बीज- 1.5 किलोग्राम प्रति एकड़
जीवाणु खाद का टीका- 20 रुपये प्रति टीका
सिंगल सुपर फॉस्फेट- 75 किलोग्राम प्रति एकड़
यूरिया- 25 किलोग्राम प्रति एकड़
जिंक सल्फेट-10 किलोग्राम प्रति एकड़

## फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

# सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

**खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा**

**बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें**

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



### फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

### गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

### गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

### तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

### पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

# 14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।




25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

### 70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

### हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

### 5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

### लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

### रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।




# स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

### क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

### बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

### इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

### निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

### बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

### इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

# रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

**60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प**

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

**सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम**

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।




### 60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

### निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

### किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

### एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

### इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

## आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

# आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

### 1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

### 2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

### 3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

### 4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

### 5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।

## खबर संक्षेप

### शरद पूर्णिमा पर बंटेगा खीर का प्रसाद

**महेंद्रगढ़।** श्री गौशाला धौलपोश आश्रम सैनीपुरा में रविवार शरद पूर्णिमा पर खीर का प्रसाद वितरण रात्रि 12:00 बजे बाद किया जाएगा इसके साथ-साथ श्वास, कास एवं दमा से संबंधित परेशानी के लिए निःशुल्क औषधि भी उपलब्ध करवाई जाती है। इस सेवा का लाभ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में जरूरतमंद लोग उठाते हैं। श्री गौशाला धौलपोश आश्रम के सदस्यों का कहना है कि जो व्यक्ति श्वास, कास एवं दमा संबंधी परेशानी के लिए निःशुल्क औषधि प्राप्त करना चाहते हैं, वे समय रहते अपना पंजीकरण करवा लें, ताकि आवश्यक व्यवस्था सुचारु रूप से की जा सके। पंजीकरण एवं अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

### संत नामदेव का प्रथम वार्षिक उत्सव आज

**मंडी अटेली।** संत श्री नामदेव समाज समिति की ओर से आज 25 अक्टूबर को प्रथम संत नामदेव जन्मोत्सव वार्षिक उत्सव समारोह मनाया जाएगा। समारोह में समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों व 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों को सम्मानित किया जाएगा। मीडिया प्रभारी राकेश पेंटर ने बताया कि समिति के प्रधान विजय पाल रोहिल्ला व अटेली समिति के पदाधिकारियों की देखरेख में होने वाले वैभव रिसोर्ट में मुख्य अतिथि नीलंठ गुरप गुरुग्राम के डायरेक्टर गुरुग्राम के सुनील वर्मा अध्यक्षता जिला सुभाष चंद वर्मा अध्यक्षता जिला सुभाष चंद वर्मा करेंगे। विशिष्ट अतिथि पूना के बिजेंद्र मेहताप रोहिल्ला, रेवाड़ी समाज के जिला प्रधान सतीश कुमार, दिल्ली पुलिस के सेवानिवृत्त डीसीपी एलएन राव शिरकत करेंगे।

### रक्तदान शिविर व क्रिकेट प्रतियोगिता 1 व 2 को

**नारनौल।** नांगल काठा में स्वर्गीय अर्जित दहिया की दूसरी पुण्यतिथि के अवसर पर एक और दो नवंबर को श्रद्धांजलि सभा, रक्तदान शिविर और क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। अर्जित दहिया सद्भावना फाउंडेशन की ओर से आयोजित इन कार्यक्रमों में 1 नवंबर को रक्तदान शिविर लगाया जाएगा। इसके अगले दिन 2 नवंबर को गांव नांगल काठा के खेल परिसर में अर्जित दहिया ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता करवाई जाएगी। प्रतियोगिता में कुल 64 टीमों की प्रविष्टियां रखी गई हैं। प्रथम पुरस्कार 71 हजार रुपये, द्वितीय पुरस्कार 31 हजार रुपये, तृतीय पुरस्कार 11 हजार रुपये और चतुर्थ पुरस्कार 5100 रुपये रखा गया है।

## नशे के खिलाफ राजकीय कन्या स्कूल में छात्रों को किया जागरूक

# युवाओं में नशे की लत पूरे समाज के लिए गंभीर चुनौती: डॉ. वर्मा

**नारी शक्ति को इस बुराई के विरुद्ध परिवार, समाज और देश की युवा पीढ़ी को बचाने का संकल्प लेना चाहिए: वर्मा**

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी



रेवाड़ी। छात्राओं को नशे के खिलाफ जागरूक करते डा. वर्मा।

हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की ओर से चलाए जा रहे नशा मुक्ति जागरूकता अभियान के अंतर्गत शनिवार को राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक डा. अशोक कुमार वर्मा ने छात्राओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम में शिक्षिका रितु यादव सहित अन्य शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। डा. वर्मा ने कहा कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार, शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा और भविष्य को नष्ट कर सकता है। नशे की लत केवल एक व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज के लिए गंभीर चुनौती है। युवावस्था में नशे की शुरूआत प्रायः मित्रों के दबाव, जिज्ञासा, दिखावे अथवा गलत संगति के कारण होती है। इसलिए प्रत्येक छात्रा को सजग रहना चाहिए और किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि नशे से दूर रहना ही स्वस्थ, सुरक्षित और सम्मानपूर्ण जीवन की आधारशिला है। उन्होंने बताया कि यह समस्या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैली हुई है।

### हुक्के का धुआं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक : डॉ. अशोक

उन्होंने छात्राओं को सचेत किया कि नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार से संबंधित किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी संबंधित अधिकारियों तक पहुंचाने सामाजिक उत्तरदायित्व है। उन्होंने कहा कि हुक्के का धुआं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इससे फेफड़ों, हृदय और श्वसन तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। हुक्के को सुरक्षित समझना एक बड़ी भूल है। तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थों से दूरी बनाकर रखना आवश्यक है। उन्होंने छात्राओं से आग्रह किया कि वे अपने परिवारों और आसपास के लोगों को भी नशे के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करें। उन्होंने कहा कि महिलाएं परिवार और समाज को नशा मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। माता, बहन, शिक्षिका और समाज की जागरूक नागरिक के रूप में महिलाएं युवा पीढ़ी को सही दिशा दिखा सकती हैं। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि कुछ महिलाएं भी नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार में संलिप्त पाई जाती हैं। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति को इस बुराई के विरुद्ध आगे आकर अपने परिवार, समाज और देश की युवा पीढ़ी को बचाने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने प्रतिबंधित नशीले पदार्थों से संबंधित गुप्त सूचनाएं हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के हेल्पलाइन नंबर 1933 अथवा हरियाणा हेल्पलाइन नंबर 90508-91508 पर साझा करने की अपील की।

## राजवंशी स्कूल में छात्रों को किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल



नारनौल। विद्यार्थी व क्लब सदस्य। फोटो: हरिभूमि

विश्व पोलियो दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब ऑफ नारनौल रॉयल्स की ओर से राजवंशी सीनियर सेकेंडरी स्कूल दोचाना में मिशन जीरो पोलियो के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में पोलियो उन्मूलन के प्रति जागरूकता बढ़ाना, उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना तथा समाज को पोलियो मुक्त विश्व के संकल्प से जोड़ना रहा। रोटरी क्लब ऑफ रॉयल्स की ओर से पोस्टर मेकिंग व भाषण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। क्लब प्रधान रोटेरियन दिनेश भार्गव ने कहा कि पोलियो उन्मूलन केवल एक स्वास्थ्य अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक बच्चे को सुरक्षित भविष्य देने का हमारा सामूहिक संकल्प है। दुनिया को पोलियो मुक्त बनाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, लेकिन हमारी जिम्मेदारी अभी समाप्त नहीं हुई है। प्राचार्य दिनेश सांखला ने रोटरी क्लब के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों को जागरूक नागरिक बनाना भी है।

### ये रहे मौजूद

इस मौके पर क्लब वाइस प्रेसिडेंट रोटेरियन अनिल कुमार यादव, वाइस प्रिंसिपल, क्लब के कोषाध्यक्ष रोटेरियन मोहन सैनी, क्लब के वरिष्ठ सदस्य रोटेरियन विनय जैन उपस्थित रहे।

### आरपीएस कॉलेज में इंटीग्रल समीकरणों पर व्याख्यान

**महेंद्रगढ़।** आरपीएस डिग्री कॉलेज बलाना के गणित विभाग द्वारा छात्रों के अकादमिक संवर्धन और गणितीय अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान के उद्देश्य से एक विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. दिनेश कुमार मदान अध्यक्ष, गणित विभाग, अधिष्ठाता, इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी संकाय; निदेशक, आईक्यूएसी, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय भिवानी उपस्थित रहे। उन्होंने कैलकुलस और इंटीग्रल समीकरणों के अनुप्रयोग विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। संस्था चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव एवं सीईओ इंजी. मनीष राव ने कहा कि गणित केवल एक विषय नहीं बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास की रीढ़ है। कुलसचिव डॉ. देवेंद्र यादव तथा निदेशक डॉ. महेश यादव ने कहा कि उच्च शिक्षा में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ उसके प्रायोगिक में उपयोग को समझना आवश्यक है।

## एमआर स्कूल के विद्यार्थियों को स्काउट-गाइड प्रमाण पत्र वितरित



नारनौल। एमआर पब्लिक स्कूल मित्रपुरा में स्काउट एवं गाइड के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 475 स्काउट एवं गाइड प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। प्रमाण-पत्र प्राप्त करने पर विद्यार्थियों में उत्साह और खुशी का माहौल देखने को मिला। इस अवसर पर चेयरमैन सियाराम यादव ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि स्काउट एवं गाइड जैसी गतिविधियां विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता और समाजसेवा की भावना विकसित करती हैं। प्रधानाचार्या अनीता यादव ने कहा कि 475 प्रमाण-पत्रों का वितरण विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करने वाला महत्वपूर्ण अवसर है। विद्यालय प्रबंधन ने सभी प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

## शहीद हमारे प्रेरणास्त्रोत, उनके बलिदान देते है कर्तव्यनिष्ठ रहने की प्रेरणा : एसपी



रेवाड़ी। विजेता टीम के साथ पुलिस अधिकारी। वालीबॉल खेलते हुए पुलिस व युवा।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिला पुलिस की ओर से 31 अक्टूबर तक पुलिस स्मृति दिवस एवं झंडा दिवस मनाया जा रहा है। शनिवार को विभिन्न थाना क्षेत्र के स्कूल-कॉलेज व अन्य स्थानों पर शहीद पुलिसकर्मियों के सम्मान में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधिकारियों सहित युवाओं ने शहीदों के चित्रों पर पुष्प अर्पित किए और उनकी वीरता को नमन किया। सभी ने शपथ ली कि वे अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठा, ईमानदारी और देशभक्ति के साथ करते हुए शहीदों के आदर्शों पर चलेंगे। इस अवसर पर पुलिस अधिकारियों ने युवाओं को स्मृति दिवस के महत्व के बारे में बताया। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि शहीद हमारे प्रेरणास्त्रोत हैं। उनकी वीरता और बलिदान हमें सदैव कर्तव्यनिष्ठ रहने की प्रेरणा देते हैं।

## कर्मचारी संगठन के नियमों पर रहे जागरूक : प्रो. तनेजा

- आईजीयू में स्वयं की दक्षताओं को बढ़ाने एवं सकारात्मक कार्य संस्कृति को प्रोत्साहित करने विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मीरपुर



रेवाड़ी। कार्यशाला में संबोधित करते कुलपति मिगलानी।

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की ओर से स्वयं की दक्षताओं को बढ़ाने एवं सकारात्मक कार्य संस्कृति को प्रोत्साहित करने विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक के पूर्व कुलसचिव प्रो. गुलशन तनेजा ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. असीम मिगलानी, परीक्षा नियंत्रक डा. विपुल यादव तथा आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. विकास बत्रा उपस्थित रहे। इस मौके पर कुलपति प्रो. असीम मिगलानी ने कार्यस्थल पर समय की पाबंदी, कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण तथा टीम भावना के साथ कार्य करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी संस्थान की प्रगति के लिए कर्मचारियों का अनुशासित, सकारात्मक और सहयोगात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला से प्राप्त विचार एवं सुझाव विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होंगे। मुख्य वक्ता प्रो. गुलशन तनेजा ने प्रभावी कार्य संस्कृति विकसित करने, सकारात्मक सोच बनाए रखने तथा उपलब्ध समय का उचित उपयोग करने के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक कर्मचारी को अपने संगठन की कार्य संस्कृति, उद्देश्यों, नियमों और अपेक्षाओं के प्रति जागरूक रहना चाहिए। कार्य के प्रति जिम्मेदारी, समय प्रबंधन, आपसी समन्वय तथा कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करना संस्थागत दक्षता बढ़ाने के महत्वपूर्ण आधार हैं। उन्होंने मोबाइल फोन के अनावश्यक एवं अत्यधिक उपयोग को नियंत्रित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

### ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर उप-कुलसचिव, स्थापना शाखा डा. संजीव कुमार, उप-कुलसचिव, शैक्षणिक शाखा मोहित रेवड़ी व उप-कुलसचिव डा. नवीन पिपलानी सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं शाखाओं के गैर-शिक्षक कर्मचारी उपस्थित रहे।

## माडर्न स्कूल के विद्यार्थियों ने किया खालड़ा वाले हनुमान मंदिर का शैक्षणिक भ्रमण

- भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को सांस्कृतिक स्थलों की जानकारी देना रहा : प्राचार्य प्रदीप कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़



महेंद्रगढ़। भ्रमण करते विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल चामधेड़ा रोड तथा मॉडर्न किड्स प्ले स्कूल के प्राइमरी विंग के 218 विद्यार्थियों का एक दल शनिवार को नारनौल स्थित खालड़ा वाले हनुमान मंदिर में शैक्षणिक भ्रमण पर गया। विद्यालय प्राचार्य प्रदीप कुमार तंवर ने बताया कि भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की जानकारी देना तथा उनमें भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना था। मंदिर पहुंचकर विद्यार्थियों ने श्रद्धापूर्वक दर्शन किए और वहां के धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव किया। इस दौरान मॉडर्न किड्स प्ले स्कूल की हेड शर्मिला, प्रियंका, सीमा, रीमा, बबीता, हेमलता, कृष्णा, आशा के साथ-साथ मॉडर्न स्कूल से भूपेंद्र सैनी, राकेश, विनोद सैनी, दिनेश सैनी, अनिता, अंजू और सीमा ने विद्यार्थियों के साथ रहकर भ्रमण को व्यवस्थित बनाने में सहयोग दिया।

## राव जयराम स्कूल की छात्रा साक्षी बनी सेना में लेफ्टिनेंट

- साक्षी की सफलता मेहनत, अनुशासन का उदाहरण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़



राव जयराम सीनियर सेकेंडरी स्कूल की प्रतिभाशाली छात्रा साक्षी ने भारतीय सेना में चिकित्सा अधिकारी के रूप में लेफ्टिनेंट पद पर चयनित होकर अपने परिवार, विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। साक्षी के पिता संदेश गांव लावण के निवासी हैं। उनकी इस उपलब्धि से परिवारजनों, ग्रामीणों और विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है। साक्षी की सफलता मेहनत, अनुशासन, समर्पण और दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रेरणादायक उदाहरण है। भारतीय सेना में चिकित्सा अधिकारी के रूप में सेवाएं देना गौरव की बात है। इस पद पर रहते हुए चिकित्सा अधिकारियों को सैनिकों के स्वास्थ्य की देखभाल और उन्हें आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभानी होती हैं। राव जय राम सीनियर सेकेंडरी स्कूल के लिए साक्षी की यह उपलब्धि गर्व का विषय है। किसी भी शिक्षण संस्थान की पहचान उसके विद्यार्थियों की सफलता और उनके जीवन में हासिल की गई उपलब्धियों से बनती है।

### ऑनलाइन तबादला नीति वापस ले सरकार

**महेंद्रगढ़।** बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन स्वास्थ्य विभाग में लागू की जा रही मॉडल ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के पूर्ण विरोध में 25 अक्टूबर को मुख्यमंत्री आवास पर रोष प्रदर्शन करेगा एवं ज्ञापन सौंपते हुए एमपीएचडब्ल्यू वर्ग को मोटॉप प्रक्रिया से बाहर रखने के लिए अपील करेगा। एसोसिएशन की प्रदेश अध्यक्ष शर्मिला देवी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश चौहान, महासचिव सहदेव सांगवान एवं प्रवक्ता संदीप कुंडू ने सरकार को दूसरा स्मरण पत्र भेजते हुए स्पष्ट किया है कि एमपीएचडब्ल्यू (महिला एवं पुरुष) वर्ग को इस पॉलिसी से पूरी तरह बाहर रखा जाए तथा रेशनलाइजेशन के नाम पर स्वास्थ्य विभाग में पद समाप्त करने की प्रक्रिया पर रोक लगाई जाए। तय कार्यक्रम अनुसार प्रदेश भर से हजारों महिला एवं पुरुष कर्मचारी सुबह दस बजे से ताऊ देवीलाल पार्क में इक्कठा होंगे।



महेंद्रगढ़। बच्चों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

## हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता में रिंकू व शबनम की टीम प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

राजकीय स्कूल ढाढ़ोत में हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए गणित प्रवक्ता सतन सिंह ने बताया कि उक्त प्रतियोगिता कक्षा दसवीं व 12वीं के विद्यार्थियों के बीच करवाई गई। प्रतियोगिता से पूर्व सभी विद्यार्थियों का एक लिखित टेस्ट लिया गया। जिसमें चयनित प्रतिभागियों में चारों हाउस से दो-दो टीम बनाई गई। प्रतियोगिता का आयोजन पांच राउंड में किया गया। उन्होंने बताया कि इस प्रतियोगिता के आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना तथा व्याकरण संबंधी ज्ञान को विकसित करना था। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों से हिंदी व्याकरण से जुड़े विभिन्न प्रश्न पूछे गए। प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक प्रश्नों के उत्तर दिए और अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। प्रतियोगिता में रिंकू व शबनम की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं करीना, खुशी, वंशिका व दक्ष की टीम संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रही। प्राचार्य अजीत सिंह ने कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।



### हर स्वस्थ व्यक्ति को करना चाहिए रक्तदान : गोविंद

**मंडी अटेली।** गांव सलीमपुर में बाबा निहालचंद सेवादल पटीकरा की ओर से रेडक्रॉस नारनौल के सहयोग से 26वां रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के निजी सचिव गोविंद गोस्वामी एवं विशिष्ट अतिथि सिहमा पंचायत समिति के चेयरमैन प्रतिनिधि राजकुमार यादव रहे। शिविर में रक्तदाताओं ने उत्साह के साथ भाग लेते हुए 30 यूनिट रक्तदान किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि गोविंद गोस्वामी ने कहा कि रक्तदान महादान है और इससे जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराकर उनकी जान बचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। रक्तदान करने से समाज में सेवा और सहयोग की भावना मजबूत होती है।शिविर के दौरान रक्तदाताओं को बैज लगाकर और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। सरपंच कुमारी आरती यादव ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान मानवता की सच्ची सेवा है।

## सोशल मीडिया पर दोस्तों के नाम से होने वाली ठगी से रहें सावधान: एसपी

# ठगी के लिए अपराधी अपना रहे नए तरीके

एसपी हेमेंद्र मीणा ने लोगों को साइबर ठगी पर दिए बचाव के टिप्स

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा ने आमजन को सोशल मीडिया तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर बढ़ रहे इम्पर्सनेशन यानि दोस्तों या वरिष्ठ अधिकारियों के नाम से की जाने वाली साइबर ठगी के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी है। एसपी ने बताया कि वर्तमान में साइबर अपराधी आम नागरिकों को ठगने के लिए नए-नए तरीके अपना रहे हैं। इनमें सबसे प्रमुख तरीका लोगों के परिचितों, दोस्तों या वरिष्ठ अधिकारियों की फर्जी प्रोफाइल बनाकर या उनके नाम का इस्तेमाल कर पैसे की मांग करना है।

### ये है ठगी का तरीका

**फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल:** ठग किसी व्यक्ति या अधिकारी की डीपी और नाम का उपयोग करके फेसबुक, व्हाट्सएप या इंस्टाग्राम पर फर्जी अकाउंट बनाते हैं।

**आपात स्थिति का बहाना:** ये अपराधी पीड़ितों को मैसेज भेजकर किसी मेडिकल इमरजेंसी, दुर्घटना या तत्काल पैसों की आवश्यकता का बहाना बनाते हैं।

**वरिष्ठ अधिकारियों का नाम:** कई मामलों में उच्च अधिकारियों के नाम व फोटो का दुरुपयोग कर उनके मातहतों या आम जनता से ऑनलाइन ट्रांसफर के जरिए

### ठगी से बचाव के मुख्य उपाय

**तुरंत सत्यापित करें:** यदि कोई दोस्त, रिश्तेदार या वरिष्ठ अधिकारी किसी नए नंबर या सोशल मीडिया से अचानक पैसों की मांग करे, तो पैसे भेजने से पहले उनके पुराने-मूल नंबर पर फोन करके पुष्टि अवश्य करें।



**प्रोफाइल की जांच करें:** सोशल मीडिया पर मिलने वाली फ्रेंड रिक्वेस्ट या मैसेज की सत्यता की जांच करें।

**व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें:** किसी भी अनजान या संदिग्ध व्यक्ति के साथ अपना ओटीपी, बैंक विवरण या संवेदनशील जानकारी साझा न करें।

**जल्दबाजी में निर्णय न लें:** साइबर ठग हमेशा जल्दबाजी और डर का माहौल बनाते हैं। ऐसे किसी भी मैसेज पर पैनिक न हों। यदि फिर भी किसी भी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी का शिकार होते हैं, तो तुरंत राष्ट्रीय साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर: 1930 पर संपर्क करें या साइबरक्राइम.जीओवी.इन पोर्टल पर अपनी शिकायत दर्ज कराएं।

**ग्राम पंचायत साल्हावास**
खण्ड धारूहेड़ा, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) - 123401

**नीलामी सूचना**

सर्व साधारण को सूचित किया बाता है कि ग्राम पंचायत साल्हावास खण्ड धारूहेड़ा में दिनांक 29.10.2026 को प्रातः 11 बजे मौके पर जोहड़ में जाल (सफाई) के लिए मत्स्य की नीलामी मौके पर की जाएगी। बोली की शर्तें मौके पर सुनाई जाएंगी।

हस्ता/- दीक्षा, सरपंच, ग्राम पंचायत साल्हावास, खण्ड धारूहेड़ा, मो0 9991339333, 9990006166



## दिव्यांग बच्चों ने दीपावली के उपलक्ष्य में लगाई स्टाल

**रेवाड़ी।** श्री कृष्ण स्कूल हासांका में शनिवार को दिव्यांग बच्चों की ओर से दीपावली के उपलक्ष्य में स्टाल लगाई गईं। दिव्यांग बच्चों ने स्टाल पर स्वयं की ओर से बनाए गए दीया-कैंडल व अन्य सजावटी सामान को प्रदर्शित किया। स्कूल के शिक्षकों व बच्चों ने दिव्यांगों से सामान खरीदकर उनकी आर्थिक सहायता की, साथ ही समाज को संदेश दिया कि इस तरह के बच्चों की सहायता करने से उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग मिलता है। इस अवसर पर स्कूल संचालक सुरेश कुमार यादव ने कहा कि ऐसे आयोजन से समाज में दिव्यांग बच्चों को प्रोत्साहन देकर आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

# शरद पूर्णिमा का पर्व श्रद्धाभाव से मनाया जाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रविवार को शरद पूर्णिमा का पर्व श्रद्धाभाव से मनाया जाएगा। विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं की ओर से भी शरद पूर्णिमा पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। शरद पूर्णिमा को कोजागर पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। मान्यता है इसी रात भगवान श्रीकृष्ण ने महाकाली और गोपियों के साथ महारास रचाया था और बांसुरी की मधुर तान से ईश्वरीय आनंद की वर्षा की थी। धार्मिक और आयुर्वेदिक दृष्टि से इस रात्रि का विशेष महत्व है, क्योंकि इस दिन चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होकर पृथ्वी पर अमृत वर्षा करता है।

### चंद्रमा पर त्राटक करना है लाभकारी

ज्योतिषाचार्य डा. अजय शास्त्री का कहना है कि दशहरे से लेकर शरद पूर्णिमा तक चंद्रमा की किरणों में विशेष औषधीय गुण होते हैं। नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए इन रात्रियों में 15 से 20 मिनट तक चंद्रमा पर त्राटक करना बहुत लाभकारी माना गया है। इसके अलावा, इस रात सुई में धागा पिरोने का अभ्यास करने से भी आंखों की रोशनी तेज होती है।



### अमृतमय खीर और अश्विनी कुमारों की कृपा

ज्योतिषाचार्य ने कहा कि देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार माने गए हैं। इस रात्रि में दूध, चावल और मिश्री से बनी खीर को खुले आसमान के नीचे चंद्रमा की चांदनी में रखा जाता है। मान्यता है कि इससे खीर में औषधीय गुण आ जाते हैं। भगवान को भोग लगाने के बाद इस प्रसाद को खाने से शरीर की शिथिल इंद्रियां पुष्ट होती हैं और ओज-बल में वृद्धि होती है।

### दमा के रोगियों के लिए वरदान

डा. शास्त्री ने कहा कि परंपराओं के अनुसार दमा रोग से पीड़ित लोगों के लिए शरद पूर्णिमा की रात बेहद खास होती है। इस रात जागरण करते हुए चंद्रमा की चांदनी में रखी गई औषधीय युक्त खीर का सेवन करने से श्वास संबंधी रोगों में विशेष लाभ मिलता है। यदि इस रात चंद्रमा की चांदनी गर्भवती महिला की नाभि पर पड़े, तो गर्भस्थ शिशु और माता का स्वास्थ्य पुष्ट होता है।

चंद्रमा की चांदनी में रखी गई औषधीय युक्त खीर का सेवन करने से श्वास संबंधी रोगों में लाभ मिलता है

### कैसे तैयार करें अमृतमय खीर

खीर को तांबे, पीतल या आजकल मिलने वाले कृत्रिम चांदी के बर्तनों के बजाय असली चांदी या लोहे की कढ़ाई में बनाना उत्तम माना जाता है, जिससे उसके पोषक तत्व खीर में आ सकें। खीर में इलायची, खजूर या छुहारा मिलाया जा सकता है। भारी मेवे रात के समय पचने में कठिन हो सकते हैं, इसलिए उनका सेवन सीमित मात्रा में करें। रात्रि 9 बजे के आसपास महीन कपड़े से ढककर खीर को चंद्रमा की चांदनी में रखें। इसके बाद रात 12 बजे के लगभग भगवान को भोग लगाकर इसे प्रसाद रूप में ग्रहण किया जा सकता है। शरद पूर्णिमा की यह पावन रात्रि व्यक्ति को शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करती है।

## कनीना मंडी में पनप रही अव्यवस्था से किसान परेशान

**कनीना।** अनाज मंडी में प्रशासनिक दावों और जमीनी हकीकत के बीच का जमीन-आसमान का अंतर एक बार फिर उजागर हुआ है। सरकारी निर्देशों के अनुसार मंडी में खरीद प्रक्रिया और गेट खुलने का समय सुबह आठ बजे तय है, लेकिन हकीकत यह है कि सुबह के नौ बजे के बाद भी न तो मंडी के मुख्य द्वार खोले गए और न ही गेट पास जारी किए गए। शनिवार सुबह के इस नजारे को लेकर किसानों में तरह-तरह की चर्चाएं जन्म ले रही हैं। मार्केट कमेटी सचिव द्वारा जारी शेड्यूल के मुताबिक शनिवार को गुढ़ा, गाहड़ा, गोमली, गोमला, इसराना, झाड़ली, झिगावन, ककराला, कलवाड़ी, करीरा व कपूरी गांवों के किसानों का बाजरा खरीदा जाना था, इससे पूर्व 23 अक्टूबर के किसान भी खड़े थे। शुक्रवार को सायं सात बजे मंडी में खरीद कार्य बंद कर दिया था। इसलिए वे किसान मजबूरन अपनी बारी का इंतजार करते रहे। इस किसानों को कोई टोकन जारी नहीं किए गए। किसान मंडी के बाहर वाहनों की लंबी कतारों में खड़े इंतजार करने को मजबूर हैं। किसानों का आरोप है कि सुबह नौ बजे से पहले मंडी में खरीद शुरू होना तो दूर, गेट पास जारी करने तक की जहमत नहीं उठाई जाती। मौके पर मौजूद किसानों मनीत खैराना, मनोज गोमला, मुकेश गुढ़ा का कहना है कि वे शुक्रवार सायं छह बजे ही मंडी पहुंच गए थे, लेकिन मंडी के अधिकारियों की व्यवस्था के कारण 24 घंटे बाद तक उनका बाजरा नहीं खरीदा जा सका।

### तारों में करंट दौड़ते ही लोगों को मिली बड़ी राहत

# पटरी पर लौटी बिजली व्यवस्था, आधी रात तक सभी फीडर हो गए रिस्टोर

### दो दिन तक करना पड़ा भारी परेशानी का सामना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

लगभग 48 घंटे तक बिजली-पानी की समस्या झेल चुके लोगों को आखिरकार शुक्रवार देर रात तक पूरी तरह राहत मिल गई। बिजलीकर्मियों और सरकार के बीच समझौते के बाद हड़ताल खत्म होते ही रात को कर्मचारियों ने कामकाज शुरू कर दिया। आधी रात तक अधिकांश बिजली फीडरों को चालू कर दिया गया, जिससे लोगों को बड़ी राहत मिली। बुधवार की रात ही निजीकरण और प्राइवेट कंपनी को समानांतर लाइसेंस दिए जाने के विरोध में बिजली कर्मचारी तीन दिन की हड़ताल पर चले गए थे। कर्मचारियों की हड़ताल के साथ ही आमजन के लिए आफत खड़ी हो गई थी। एक के बाद एक बड़ी संख्या में बिजली फीडर बंद हो गए थे। दो दिन तक बिजली गुल रहने के बाद पानी का संकट भी खड़ा हो गया था। बिजली-पानी की समस्या को लेकर लोगों ने सड़कों पर उतरना शुरू कर दिया था। हर तरह बिजली के अभाव में लोगों में हा-हाकार मचना शुरू हो गया था। शुक्रवार देर सायं प्रदेश सरकार के साथ बिजली यूनियनों की बातचीत सिरे चढ़ने के बाद जैसे ही हड़ताल खत्म हुई, बिजली निगमों के कर्मचारियों ने तुरंत काम पर लौटना शुरू कर दिया। इसके बाद कर्मचारियों ने मोर्चा संभालते हुए पहले सब स्टेशनों और बाद में फीडरों को चालू करना शुरू किया।



रेवाड़ी। अनाजमंडी में 28 घंटे बाद शुक्रवार रात्रि शुरू हुई लाइटें। फोटो : हरिभूमि

### निगम कर्मियों ने तुरंत किया सामान्य

हड़ताल खत्म होने के बाद अधिकारियों ने बिजली कर्मियों को तुरंत काम पर लौटने के मैसेज ग्रुपों में डाल दिए थे। इसके बाद एचवीपीएन और डीएचबीवीएन के कर्मचारियों ने तत्काल ड्यूटी पर पहुंचना शुरू कर दिया। पहले बड़ी सब स्टेशनों की आपूर्ति बहाल की गई। इसके बाद छोटे सब स्टेशनों को रीस्टोर किया गया।

### संचार सेवा ने खूब किया परेशान

बिजली के अभाव में मोबाइल कंपनियों के टावरों ने भी काम करना बंद कर दिया था। शुक्रवार देर सायं तक आधे से ज्यादा मोबाइल टावर ठप हो गए थे, जिससे लोगों को नेटवर्क की समस्या का सामना करना पड़ा। टावर फेल होने से इंटरनेट सेवाएं भी बाधित होना शुरू हो गई थीं। बिजली आपूर्ति बहाल होते ही मोबाइल सेवाएं भी सुचारू हो गईं।

### ठेकेदार के कर्मचारी साबित हुए फेल

सरकार आदेशों को अमलीजामा पहनाते हुए सब स्टेशनों पर पुलिसकर्मी से लेकर पटवारी तक लगाए गए। ठेकेदारों के कर्मचारियों को बिजली आपूर्ति बहाल करने का जिम्मा सौंपा गया, लेकिन यह सभी पूरी तरह फेल साबित हो गए। बिजली निगम में कार्य कर चुके कुछ पुलिसकर्मी चंद फीडरों को चलाने में जरूर कामयाब रहे।

### कर्मचारियों ने दिखाया पूरा उत्साह



हड़ताल समाप्त होने की घोषणा के बाद निगम कर्मियों ने पूरे उत्साह के साथ बिजली आपूर्ति सुचारू करने की दिशा में प्रयास शुरू कर दिए थे। रात 12 बजे तक लगभग पूरे जिले की बिजली आपूर्ति सामान्य हो गई। कुछ फीडरों को शनिवार सुबह तक रिस्टोर कर दिया। -संजय यादव, एक्सईएन, एचवीपीएन।



रेवाड़ी। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सम्मानित करते अतिथि। फोटो : हरिभूमि

## प्रथम इंटरनेशनल स्कूल में मेधावी छात्रों को किया सम्मानित

■ विद्यालय के डायरेक्टर उत्तम यादव ने छात्रों को बधाई दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

प्रथम इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में खंड शिक्षा अधिकारी दुष्यंत कुमार छुरियावास के पूर्व सरपंच कैलाश, कमालपुर गांव के सरपंच प्रतिनिधि विशाल, राव शूटिंग अकेडमी से कोच रमन राव व समय यादव मौजूद थे। विद्यालय से स्कूल डायरेक्टर उत्तम यादव, को-फाउंडर कृष्ण यादव, चेयरपर्सन निधि व एमडी हिमांशु यादव ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। वहीं, छात्र यश को 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग में नेशनल के लिए चयन होने पर सम्मानित किया गया। इनके अलावा दक्ष और मनीष ने स्केटिंग तथा अन्य छात्रों को एथलेटिक्स व विभिन्न खेलों जिला, स्टेट और नेशनल लेवल पर मेडल जीतने पर पुरस्कार दिए गए। मानवी, महिका, लक्ष्या, यश और प्रशांत को 2100-2100, हितांशु, हर्षवर्धन, दिविशा और मनीष को 1100-1100 तथा मानवी, यशिका, हर्ष, दीपिका, कृतिका, अधिवा, वैष्णवी और माही को 500-500 का नकद पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि सम्मान से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे भविष्य में और भी बेहतर करने के लिए प्रेरित होते हैं। विद्यालय के डायरेक्टर उत्तम यादव ने सभी छात्रों को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

### होनहार छात्रा

समारोह में विद्यालय की तीन होनहार छात्रा लक्ष्या, महिका और मानवी को हाल ही में आयोजित सीआईएसई नेशनल गेम्स की 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग स्पर्धा में सिल्वर मेडल जीतने पर सम्मानित किया गया।

# पंजाबी भवन में डांडिया उत्सव की धूम महिलाओं में नजर आया उत्साह

**रेवाड़ी।** पंजाबी समाज एवं पंजाबी महिला मंच के संयुक्त तत्वावधान में पंजाबी भवन में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम व डांडिया उत्सव का आयोजन किया गया। उत्सव में समाज के सभी वर्गों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन, गायन व एंकरिंग रिवाज इवेंट ने की। समारोह की शुरूआत बेबीज प्राइड स्कूल के बच्चों की ओर से प्रस्तुत मनमोहक रामायण मंचन से हुई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। इसके बाद प्रोफेशनल गरबा डांस ग्रुप की प्रस्तुति से पूरा सभागार झूम उठा। डांडिया, विभिन्न मनोरंजक खेल और लक्की ड्रा ने कार्यक्रम के आकर्षण को और बढ़ाया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रीति मलिक ने शिरकत की। इस अवसर पर डा. वंदना पोपली ने कहा कि त्योहारी सीजन में इस तरह के सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रम हमारी समृद्ध परंपराओं को जीवंत रखने के साथ-साथ समाज को एक सकारात्मक दिशा देते हैं। प्रीति मलिक ने कहा ऐसे आयोजनों से आपसी भाईचारा और सामाजिक सौहार्द मजबूत होता है। कार्यक्रम के आयोजन में पंजाबी महिला मंच से संगीता खुराना, अनु बहल, अनीता भयाना, सुमन चक्रवर्ती, पिंकी चांदना, सीमा चराया, खुशबू नरूला, रीना बाउंट्रा, अलका मलिक, रमनदीप, उषा सहगल व तमन्ना सहित सभी पदाधिकारियों का योगदान रहा।



## विलेज कप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी हुए सम्मानित

**रेवाड़ी।** जिले के गांव नंगली परसापुर में आयोजित 27वें विलेज क्रिकेट कप में पंचायत समिति सदस्य कुलदीप यादव इयोढ़ई ने मुख्य अतिथि के रूप शिरकत की। उनके साथ विकास चौधरी भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में गांव के सरपंच नितेश और आयोजन समिति के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि कुलदीप यादव ने आयोजन समिति को 5100 रुपये का सहयोग दिया। विकास चौधरी ने 1100 रुपये का योगदान देकर खिलाड़ियों और समिति को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे ग्रामीण खेल आयोजन युवाओं को अनुशासन, टीमवर्क और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का संदेश देते हैं। समारोह के दौरान मैन ऑफ द मैच चुने गए खिलाड़ी को सम्मानित किया गया। इसके अलावा हैट्रिक करने तथा अर्द्ध शतक और शतक बनाने वाले खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया गया। इस मौके पर कमेटी सदस्य कपिल, दिवाकांत, अनूप, इंद्रजीत, दिनेश, जितेन्द्र, प्रीतम, अरुण, प्रिंस, परवीन, मोती, राजबीर, मास्टर अमर सिंह, फते सिंह, रमेश सूबेदार, सुभाष, मणि व निहाल सिंह सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।



# गवर्नमेंट स्कूल सुधराना में जरूरतमंद छात्रों को वितरित किए स्वेटर

■ हेडमास्टर दिनेश कुमार ने संस्था का आभार व्यक्त किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

राजकीय उच्च विद्यालय सुधराना में शनिवार को धारौली की सामाजिक संस्था मां-मातृभूमि सेवा समिति की ओर से वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत 98 जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित किए गए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि लक्ष्मी सिंह ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें अनुशासन में रहकर कड़ी मेहनत करने व सकारात्मक दिशा में आगे बढने के लिए प्रेरित किया। भाकली के शिक्षाविद मा. सतीश यादव की ओर से सभी छात्रों को पेन भेंट किए गए। सुधराना गांव के सतबीर सिंह ने सभी छात्रों को कापी व पेन भेंट किए। विद्यालय के हेडमास्टर दिनेश कुमार ने संस्था का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मां-मातृभूमि सेवा समिति के अध्यक्ष युद्धवीर सिंह लांबा व नीरज कुमार जांगड़ा सहित विद्यालय स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।



रेवाड़ी। विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित करते संस्था के पदाधिकारी एवं स्टाफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

## जाट समाज जिला कार्यकारिणी ने शिक्षा मंत्री का जताया आभार



रेवाड़ी। शनिवार को जाट समाज जिला कार्यकारिणी के प्रधान सूरत सिंह कटारिया, उप प्रधान धनपत सिंह बड़ेसरा, सचिव हंसराज कोच, सह सचिव भरत सिंह नंबरदार और रणवीर सिंह जांघू के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने हरियाणा सरकार के शिक्षा मंत्री चौ.महिपाल सिंह ढांडा से पानीपत स्थित निवास पर मुलाकात की। इस दौरान शिक्षा मंत्री के गत 4 अक्टूबर को जाट समाज की ओर से आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह, सामाजिक पत्रिका जागृति के तृतीय संस्करण विमोचन और डिजीटल लाइब्रेरी के उद्घाटन पर शिरकत करने व 15 लाख रुपये का सहयोग देने की घोषणा को लेकर आभार व्यक्त किया गया। शिक्षा मंत्री ने जाट समाज को भविष्य में भी समाज सेवा में हमेशा सकारात्मक सहयोग देने का आश्वासन दिया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

### प्रतियोगिता में साहिल यादव ने प्रथम, यक्षित ने द्वितीय और प्रिंस ने तृतीय स्थान प्राप्त किया

# खिलाड़ियों ने फेंसिंग प्रतियोगिता से दिया नशा मुक्त भारत का संदेश, साहिल बने विजेता

■ प्रतिभागी खिलाड़ियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए

■ युवाओं को नशे से दूर रहने अपने परिवार और समाज तक इस संदेश को पहुंचाने के लिए शपथ दिलाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी





रेवाड़ी। फेंसिंग प्रतियोगिता में भाग लेते हुए खिलाड़ी तथा कार्यक्रम में विजेता व अन्य खिलाड़ी अतिथियों के साथ। फोटो : हरिभूमि

मेरा युवा भारत, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार की ओर से नशा मुक्त युवा-विकसित भारत संकल्प अभियान के तहत युवाओं को नशे से दूर रखने और खेलों से जोड़ने के उद्देश्य से शनिवार को राव तुलाराम स्टेडियम में फेंसिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस पहल के अंतर्गत 100 सप्ताह तक देशभर में जागरूकता एवं जनभागीदारी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी संदेश के साथ खिलाड़ियों को अपनी ऊर्जा खेल, अनुशासन, शिक्षा और राष्ट्र निर्माण में लगाने के लिए प्रेरित किया गया। प्रतियोगिता में साहिल यादव ने प्रथम, यक्षित ने द्वितीय और प्रिंस ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर एशियन गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले सचिन, एशियन कैडेट कप कांस्य पदक विजेता जितेश यादव तथा कैडेट नेशनल चैंपियन विवेक कुमार को सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम में रेवाड़ी फेंसिंग सेंटर प्रशिक्षक राजपाल ने युवाओं को नशे से दूर रहने, अपने परिवार और समाज तक इस संदेश को पहुंचाने के लिए शपथ दिलाई। इस मौके पर मेरा युवा भारत रेवाड़ी से प्रशासनिक सहायक विनय राव और सुशील उपस्थित रहे।

### सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया

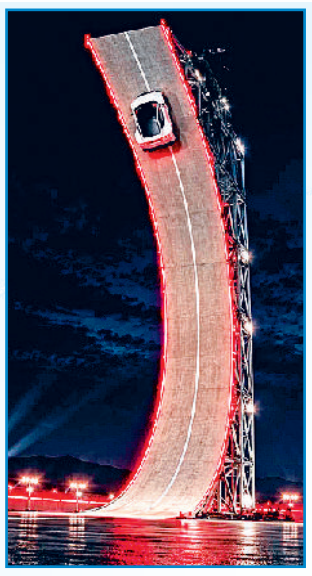
जिला युवा अधिकारी सुमित यादव ने कहा कि अभियान का मुख्य संदेश नशे से दूरी के साथ पारंपरिक खेलों से जुड़ाव के साथ स्वस्थ युवा, मजबूत भारत, विकसित भारत है। आयोजन का उद्देश्य युवाओं में नशे के प्रति जागरूकता बढ़ाना, खेल भावना को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना रहा। प्रतियोगिता सभी खिलाड़ियों के लिए एक प्रेरणादायक अनुभव रही।

## पुलिस ने ऑपरेशन मुस्कान के तहत बच्ची को परिजनों से मिलाया

**रेवाड़ी।** कसोला थाना पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए एक मासूम बच्ची को सकुशल उसके परिजनों के सुपुर्द किया। परिजनों ने बच्ची को सही-सलामत पाकर पुलिस का आभार जताया। शनिवार दोपहर 12 बजे ईआरवी 563 को मिंडा कट के पास एक 3 साल की बच्ची लावारिस हालत में घूमती दिखाई दी। पुलिस की ने बच्ची को तुरंत अपनी सुरक्षा में लिया। बच्ची अत्यंत छोटी होने के कारण अपने घर का पता बताने में असमर्थ थी। तत्पश्चात बच्ची को थाने में लाया गया और आसपास के इलाकों में तत्परता से परिजनों की तलाश शुरू की। पूछताछ से पुलिस टीम को जानकारी मिली कि बच्ची गांव सुठानी के एक किराए के कमरे में रहने वाली हैं। पुलिस ने तुरंत उनके परिजनों से संपर्क किया। बच्ची की माता भावना ने बताया कि शनिवार सुबह करीब 11 बजे उसकी बेटी खेलते-खेलते घर से निकल गई थी।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।





# क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

## आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

## वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

## खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

## भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *

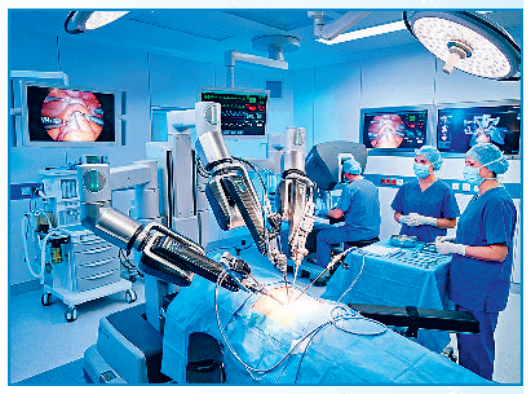


### कई देशों में हो रहे प्रयास

**भले आज** अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

# अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?



{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

**दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी:** अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

**नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन:** इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

**भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग:** रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



**कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी:** इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

**सवाल भी है बरकरार:** रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

## पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

# युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



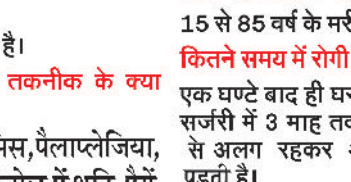
(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-



केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



## चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

# शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

**संगीत-परंपरा की अनुभूति :** राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

**बहती है मीरा की भक्ति धारा:** चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

**ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार:** चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

**आकर्षक मीरा मंदिर:** इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

**ये स्थल भी हैं दर्शनीय:** जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

### इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

# दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

**व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा:** दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

**समझें समय का सही उपयोग:** समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



**लोगों की परवाह छोड़िए:** 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

**दिमाग पर हावी न हो मोबाइल:** आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

**रिश्तों में बातचीत जरूरी:** हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

**मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं:** कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

**व्यस्त नहीं एकाग्र रहें:** एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

# हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

**विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी:** डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

**स्मार्टफोन और म्यूजिक:** पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

**खतरा केवल तीव्रता में नहीं:** जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

**संगीत सुनिए लेकिन:** संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

# फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

**यादगार हैं ये गीत:** पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

**ये फिल्में भी हैं यादगार:** करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

**पति के साथ को समर्पित भावुक गीत:** फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

**ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित:** नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

# शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता





भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

**महारास की दिव्य रात्रि:** शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

**चांदनी में अमृतवर्षा:** सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

**व्रत-पूजन:** शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *